*ISBN: 978-81-974990-9-8*

# 9. Covid-19 का चिकित्सा क्षेत्रों पर प्रभाव और नए आयाम

**वंदना यादव**

शोधार्थी,
कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर,.

Covid-19, जिसे SARS-Cov2 के नाम से जाना जाता है, एक वैश्विक महामारी के रूप में उभरी है, जिसने संपुर्ण मानव जाति को झंकझोर दिया है। यह एक संक्रामक रोग है जो SARS-Cov2 नाम के वायरस से उत्पन्न हुआ। यह वायरस पहली बार दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में पाया गया था। इस महामारी ने चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण और स्थायी प्रभाव डाला है।

- **चिकित्सा प्रणाली पर दबाव**–Covid-19 महामारी ने दुनिया भर की चिकित्सा प्रणालियों पर जबरदस्त दबाव डाला अस्पतालों और चिकित्सा संस्थानों को भारी संख्या में संक्रमित मरीजों का सामना करना पड़ा। जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की मांग में भारी वृद्धि हुई। विशेष रूप से आई.सी.यु. बेड वेंटिलेटर और ऑक्सीजन सिलिंडरों की कमी गंभीर समस्या बन गई। इसने स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को प्रभावित किया और कई स्थानों पर चिकित्सा सेवाओं का पूर्णतः ध्वस्त हो जाना देखा गया।
- **चिकित्सा कर्मियों की चुनौतियाँ**–महामारी ने चिकित्सकों नर्सों और अन्य चिकित्सा कर्मियों को अत्यधिक चनौतियों का सामना कराया। उन्हें संक्रमण के उच्च जोखिम में काम करना पड़ा, और कई स्वास्थ्य कर्मी खुद भी संक्रमित हुए और मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ा क्योंकि लंबे समय तक काम करने और रोगियों की बड़ी संख्या का सामना करने से उनमें तनाव व अवसाद की बड़ी समस्या उत्पन्न हुई इसके अतिरिक्त उचित सुरक्षा उपकरणों की कमी ने इस स्थिति को और भी गंभीर बना दिया।
- **चिकित्सा शिक्षा और प्रशिक्षण**–Covid-19 महामारी ने चिकित्सा शिक्षा और प्रशिक्षण में भी परिवर्तन लाया है। परंपरागत कक्षाओं और व्यवहारिक परिक्षणों को बंद कर दिया गया और ऑनलाइन शिक्षा का सहारा लिया गया। इसने चिकित्सा छात्रों के प्रशिक्षण में तरीके को बदल दिया। और इसके कारण छात्रों में व्यवहारिक अनुभव की कमी रही। जिससे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
- **अनुसंधान और विकास** – Covid-19 महामारी ने चिकित्सा अनुसंधान और विकास के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए। वायरस के बारे में ज्ञान प्राप्त करने, टीकों और उपचारों के विकास में तेजी लाने के लिए बड़े पैमाने पर अनुसंधान किया गया। इस अवधि में कोरोना टीकों का विकास बड़ी उपलब्धि के रूप में उभरा जिसने भविष्य में अन्य बीमारियों के भी नए दरवाजे खोले और साथ ही कोविड–19 के उपचार के लिए विभिन्न दवाओं और उपचार विधियों का परीक्षण किया गया।

- **डिजीटल स्वास्थ्य सेवाएँ** – महामारी के दौरान डिजीटल स्वास्थ्य सेवाओं का महत्व बढ़ गया। टेलीमेडिसिन और दूरस्थ स्वास्थ्य सेवाओं ने रोगियों को चिकित्सा सलाह और उपचार प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इसने न केवल संक्रमण के जोखिम को कम किया बल्कि उन क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाई जहाँ परंपरागत चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध नहीं थे।
- **स्वास्थ्य नीतियों और प्रबंधन में बदलाव** – Covid-19 महामारी ने स्वास्थ्य नीतियों और प्रबंधन में भी बड़े बदलाव लाए। सरकार और स्वास्थ्य संगठनों ने महामारी के प्रबंधन के लिए नये नियम और गाईड लाइन्स जारी किए। लॉकडॉउन, समाजिक दूरी, मास्क पहनना और यात्रा प्रतिबंध जैसे उपायों का पालन कराया। इन नीतियों का उद्देश्य संक्रमण दर को कम करना और स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव को नियंत्रित करना था।
- **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव** – महामारी का मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। लंबे समय तक घर में रहने, समाजिक संपर्क की कमी, और अनिश्चितता ने लोगों में चिंता, तनाव और अवसाद की स्थिति उत्पन्न की। चिकित्सा कर्मियों और संक्रमित लोगों के परिवारों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की मांग में वृद्धि हुई और इन सेवाओं को भी डिजीटल माध्यम से प्रदान करने का प्रयास किया गया।
- **वैक्सीन विकास और वितरण** – Covid-19 महामारी क दौरान वैक्सीन विकास और वितरण में अभूतपूर्व तेजी देखी गई। समान्यतः एक नई वैक्सीन के विकास मे कई वर्ष लगते हैं। लेकिन Covid-19 के टीकों को रिकार्ड समय में विकसित किया गया और लोगों को उपलब्ध कराया गया। यह विज्ञान और तकनीकी में तेजी से हो रहे विकास का प्रतीक हैं।

**Covid-19 के दीर्घकालिक प्रभाव–**

- **मानसिक प्रभाव** – महामारी की वजह से भय, अलगाव और जीवन तथा आय की हानि होने के कारण मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित हुए हैं। Covid-19 किसी व्यक्ति मे चिंता, अवसाद और संज्ञानात्मक समस्याओं का जोखिम बढ़ा सकता है, जान्स हॉपडिन्स के मनोचिकित्सा संज्ञान (सोच, तर्क और याद रखना) और मानसिक स्वास्थ्य के विशेषज्ञों द्वारा मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य पर Covid-19 के प्रभाव के एक अध्ययन में पाया गया कि ये समस्याएं Covid-19 से बचे लोगों के विविध नमूनों मे आम थी।

कोरोना वायरस संक्रमण के कारण संज्ञानात्मक हानि व्यक्ति के जीवन पर गंभीर प्रभाव डाल सकती है। लंबे समय तक कोविड से पीडित रोगियों के सोचने, ध्यान केन्द्रित बोलने और याद रखने के तरीके में बदलाव हो सकता है और ये लक्षण उनके काम करने यहां तक कि दैनिक जीवन की गतिविधियों को बनाए रखने की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं।

कोरोना वायरस से ठीक होने के बाद भी कुछ लोंगों में चिंता, अवसाद और कोविड के बाद अन्य मानसिक स्वास्थ्य संबधी समस्याएं बनी रहती हैं। मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति जैसे सोचने या ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई, सिरदर्द, नींद की समस्या हो सकती है।

- **शारिरिक प्रभाव–**

कोरोना वायरस रोग से संक्रमित होने वाले अधिकांश लोग कुछ हफ्तों मे ठीक हो जाते हैं लेकिन कुछ लोगों मे यहां तक कि जिन लोगों को बीमारी के हल्के लक्षण थे उनके लक्षण लंबे समय तक बने रह सकते हैं इस पोस्ट कोविड 19 सिंड्रोम के लक्षण हैं–

- थकान
- शारीरिक या मानसिक प्रयास के बाद लक्षण बदत्तर हो जाना
- बुखार
- श्वसन संबंधी लक्षण, जिसमें सांस लेने में कठिनाई या सांस फूलना या खांसी शामिल है।

**अन्य संभावित लक्षणों मे शामिल है**

- तंत्रिका संबंधी लक्षण
- खड़े होने पर चक्कर आना, चुभन महसूस होना, गंध या स्वाद का अहसास न होना।
- जोड़ों या मांसपेशियों में दर्द
- हृदय संबंधी लक्षण स्थितियाँ, जिनमें सीने में दर्द और तेज दिल की धड़कन शामिल है।
- पाचन संबंधी लक्षण, जिनमें दस्त और पेट दर्द शामिल हैं।
- रक्त के थक्के और रक्त वाहिकाएं संबंधी समस्याएं जिसमें पैरो की गहरी नसों से फेफड़े तक जाने वाला रक्त का थक्का शामिल है, जो फेफड़ों में रक्त प्रवाह को अवरूद्ध करता है।
- अन्य लक्षण जैसे कि दाने और मासिक धर्म चक्र में परिवर्तन
- प्रतिक्षा प्रणाली का कमजोर होना।

**Covid-19 महामारी का चिकित्सा के क्षेत्र में नए आयाम–**

Covid-19 महामारी ने चिकित्सा के क्षेत्र में नए आयाम और नवाचारों का जन्म दिया जिससे चिकित्सकीय सुविधा का लाभ उठाना जनसमान्य के लिए और भी सुविधाजनक हो गया है–

- **टेलीमेडिसिन और दुरस्थ स्वास्थ्य सेवाएं**– महामारी के दौरान टेलीमेडिसिन सेवाओं का व्यापक उपयोग हुआ। इससे मरीजों को घर बैठे डॉक्टरों से परामर्श प्राप्त करने में मदद मिली जिससे अस्पतालों में भीड़ भाड़ कम हुई और संक्रमण का जोखिम भी घटा।
- **वैक्सीन विकास और वितरण** – Covid-19 के टीको का तेजी से विकास और वितरण एक महत्वपूर्ण कदम रहा। उच्च तकनीक जैसे नए टीकाकरण विधियों का उपयोग किया गया जो भविष्य मे अन्य बीमारियों के टीके विकसित करने में भी सहायक हो सकता है।
- **डिजीटल स्वास्थ्य रिकार्ड** – इलेक्ट्रानिक हेल्थ रिकार्ड (HER) का उपयोग बढ़ा, जिससे मरीजों की जानकारी को अधिक सुरक्षित और सुलभ बनाया गया। इससे चिकित्सा पेशेवरों को तेजी से और सटीक रूप से निर्णय लेने में मदद मिली।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग**–AI और मशीन लर्निंग का उपयोग रोग की पहचान, निदान और उपचार में तेजी लाने के लिए किया गया। ये तकनीकें चिकित्सा शोध और डेटा विश्लेषण में भी सहायक साबित हुई हैं।
- **मेडिकल सप्लाई चेन मैनेजमेंट**–महामारी ने चिकित्सा आपूर्ति श्रृखंला के महत्व को उजागर किया। इससे आपूर्ति श्रृखंला को अधिक लचीला और कुशल बनाने के लिए नई रणनीतियों और तकनीकों का विकास हुआ।
- **मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं**–महामारी के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव को देखते हुए, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुॅच और गुणवत्ता में सुधार के लिए नए कार्यक्रम और तकनीकें विकसित की गई है जैसे योगा और परामर्श सत्र जैसे कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से भी चलाए जा रहें हैं जिससे दूर बैठे जनमानस भी इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।
- **रोबोटिक्स और ऑटोमेशन**–अस्पतालों और स्वास्थ्य सुविधाओं में स्वच्छता और सुरक्षा बनाए रखने के लिए रोबोटिक्स और ऑटोमेशन का उपयोग बढ़ा। इससे चिकित्सा कार्मियों के संक्रमण के जोखिम को कम करने में मदद मिली।
- **जीनोमिक्स और वायरस ट्रैकिंग**–वायरस के विभिन्न वेरिएंट्स को ट्रैक करने और समझने के लिए जीनोमिक्स और संबंधित तकनीकों का व्यापक उपयोग हुआ। इससे वायरस के प्रकार को नियंत्रित करने मे मदद मिली।
- **स्वास्थ्य जागरूकता**–कोविड–19 ने आम जनता में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाई । हाथ धोना, मास्क पहनना और साफ सफाई जैसे उपाय आम हो गए।
- **टीकाकरण अभियान**–व्यापक टीकाकरण अभियानों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के महत्व को उजागर किया और भविष्य में अन्य बीमारियों के खिलाफ टीकारण की तैयारी को भी मजबूत किया।
- **वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग**–महामारी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता को बढ़ाया। विभिन्न देशों और संगठनो ने मिलकर अनुसंधान टीका विकास और आपूर्ति श्रृखंला में सहयोग किया।

- **वैश्विक स्वास्थ्य नीतियां**–महामारी ने वैश्विक स्वास्थ्य नीतियों के समन्वय आवश्यकता को स्पष्ट किया। WHO और अन्य वैश्विक संगठनों ने महामारी प्रतिक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **वित्तिय निवेश**–महामारी ने हेल्थ केयर सेक्टर में वित्तिय निवेश की आवश्यकता को बढ़ाया। सरकारों और निजी स्वास्थ्य सेवाओं ने बड़े पैमाने पर निवेश किया।
- **इंश्योरेंस कवरेज**–स्वास्थ्य बीमा कवरेज का विस्तार किया गया, जिससे अधिक लोगों को चिकित्सा सेवाओं का लाभ मिल सके।

इन सभी बिंदुओ ने कोविड–19 महामारी के दौरान और उसके बाद चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार और बदलाव लाने में योगदान दिया। यह स्पष्ट है कि महामारी ने चिकित्सा प्रणाली को पुनः विचार और पुनः निर्माण का अवसर प्रदान किया जिससे भविष्य में स्वास्थ्य सेवाओं को और भी अधिक सक्षम और प्रभावी बनाया जा सके।

इस लेख के अंत में मनोचिकित्सक डॉ. स्नेहिल गुप्ता के विचार प्रस्तुत करना चाहुँगीं जिन्होंने Covid-19 (AIIMS Delhi) के चिकित्सकों के उपर पड़े प्रभावों के बारे में बताया कि वे पहले से ज्यादा संक्रमित रोगों के उपचार हेतु सावधानियाँ बरतने लगे हैं लेकिन Covid-19 एक चिकित्सक के जजबे को नहीं हरा पाया वे इस विकट परीस्थिति में रोगियों के उपचार से पीछे नहीं हटे। जबकि कुछ चिकित्सकों को महामारी के दौरान अपनी जान गंवानी पड़ी। डॉ. गुप्ता का कहना है कि महामारी ने चिकित्सकों को सिखाया कि भविष्य में किसी भी स्वास्थ्य संकट के लिए सतर्क और तैयार रहना आवश्यक है।

डॉ. गुप्ता ने मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया और कहा कि महामारी के दौरान जिस प्रकार हर वर्ग के लोगों ने तनाव व चिंता महसूस किया था इसके लिए हमें मानसिक रूप से स्वस्थ रहना भी आवश्यक है। जिसके लिए उन्होंने नियमित प्राणायाम, योगा और मेडिटेशन का सहारा लेने को कहा है। जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार Covid-19 ने भी हमें अच्छे और बुरे अनुभव दिए हैं, तथा चिकित्सा कि क्षेत्र में नए आयाम उपलब्ध कराने में सहायता दी है जिससे गंभीर से गंभीर बीमारीयों के उपचार हेतु सुविधाएँ हुई है।

## संदर्भित ग्रंथ

1. https://www.ncbi.nlm.nih gov
2. https://pib.gov.in
3. https://www.unicof.org
4. https://www.news medical.net